Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

डॉ. महेन्द्र भटनागर और उनका युग

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

डॉ. महेन्द्र भटनागर और उनका युग

Kuldeep Singh

Research Scholar, Singhania University Jhunjhunu, Rajasthan, India

----------♦----------

''महेन्द्र भटनागर एक ऐसे कवि का नाम है जो जीवन–समुद्र की लहरियों को दूर खड़ा तटस्थ भाव से निहारता भर नहीं, वरन् बिना नाव पतवार के समुद्र में कूद पड़ता है।'' ऐसे प्रबुद्ध कवि को जो अपने काव्य में सामाजिक अनुभूतियों को हुए है, उसके काव्य में समसामयिक संदर्भों की अभिव्यक्ति जानने से पहले, उसके जीवन के बारे में जानना आवश्यक है। तभी हम उसके काव्य के भावप्रदेश तक पहुँच सकेंगे।

बाह्य व्यक्तित्व :

''साँवल रंग, उन्नत ललाट, आँखों में छिपा गहरा दर्द, मध्यम ऊँचाई का स्वस्थ–सुडौल शरीर यह है महेन्द्र भटनागर का बाह्य व्यक्तित्व। वेशभूषा अन्तर्राष्ट्रीय पेण्ट, कोट या बुशर्ट। टाई नहीं। बिना फीते वाले जूते। नंगे सिर। घर में अधिकतर तहमद पहने मिलेंगें – गर्मियों में बनियान, जाड़ों में बुशर्ट–सुएटर के साथ। बाजार में ज्यादातर साइकिल पर या स्वेगा–लेम्ब्रेटा पर। लबो–लहजा मधुर–आकर्षक। व्यवहार बड़ा ही आत्मीयतापूर्ण। स्वभाव से शांत, किन्तु उसूलों के पक्के। अनियमित कार्यों से दूर। इस कारण मतलबी मित्रों की नाराजगी व उपेक्षा के शिकार। यात्रा–भीरू। मंच–भीरू। भाषण अथवा काव्य–पाठ करना यातना से गुजरना। इस कारण कार्यक्रमों–उत्सवों में बहुत कम दृष्टव्य। किसी धार्मिक मतवाद के कायल नहीं। दृष्टिकोण वैज्ञानिक एवं अत्याधुनिक। जातिवाद विरोधी। पूर्ण निरामिष। सुरा व सिगरेट कभी नहीं। हृदय रोग के कारण आजकल चाय–कॉफी भी बंद। मेहमान–नवाजी विरासत में, किन्तु दुष्टों और चरित्रहीनों से जबरदस्त एलर्जी। राजनीतिज्ञों से खास नफरत। सहज एवं स्पष्ट। नैतिक संवेदना से पूर्ण। साम्यवादी समाजव्यवस्था के पक्षधर। उसके लिए निरन्तर संघर्षशील। स्वंय का अधिकांश कार्यकाल अल्प–वेतन पर बीता। अर्थात् जलकमलव् कवि का जीवन रहा है।

जन्म :

महेन्द्र भटनागर का जन्म 26 जून, सन् 1926 को प्रातः छह बजे, बुन्देलखण्ड ही नहीं, भारत के शौर्य और बलिदान से सम्बद्ध इतिहास–प्रसिद्ध नगर झाँसी में हुआ। कवि की ननसार झाँसी में थी। पिता उन दिनों ग्वालियर रियासत की नौकरी में अध्यापक थे। माँ का नाम श्रीमती गोपालदेवी और पिता का नाम श्री रघुनन्दनलाल था। माँ धार्मिक मनोवृत्ति की – पूजा पाठ, नेम–धरम, व्रत आदि में विश्वास करने वाली – वैष्णव थीं। वे छुआछूत भी बहुत मानती थीं। रसोई में प्यास–लहसुन वर्जित था। उर्दू और हिन्दी पढ़ी हुई थी। 'रामचरितमानस' का पाठ प्रायः करती थीं। परम्परागत रीति–रिवाजों में पूर्ण आस्था थी। पर्व–त्यौहार विधिवत् मनाती थीं। अनेक लोककथाएँ, पहेलियाँ और लोकगीत कण्ठस्थ थे। उनके रहते घर का वातावरण परम्परागत संस्कारों से युक्त रहता। अंतिम समय तक वह अपने इन विश्वासों पर अड़िग रही। उनका निधन लगभग 77 वर्ष की आयु में 13 जुलाई, 1977 को उज्जैन में हुआ।

पिता आर्य समाजी थे। आर्य–समाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उनमें धार्मिक सहिष्णुता और औदार्य भरपूर था। अच्छे खिलाड़ी थे। विशेषरूप से बॉलीबॉल के। परिवार की आर्थिक दशा अच्छी न होने से उन्हें कम उम्र में नौकरी करनी पड़ी। अंग्रेजी व उर्दू पर उनका अच्छा अधिकार था।

वे इतिहास विषय में एम.ए. (आगरा विश्वविद्यालय) थे। प्रथम नियुक्ति नीमच शहर में हुई। माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक रहे, शासकीय इण्टरमीडिएट कॉलेज, मन्दसौर में इतिहास के व्याख्याता रहे, उज्जैन में सहायक शिक्षा–निरीक्षक रहे और अंत में द्वितीय श्रेणी के हाईस्कूल (मुरार, ग्वालियर) के प्रधानाध्यापक पद से छप्पन वर्ष की आयु में सेवा–निवृत्ति हुई। वे अपने सिद्धांतों के बड़े पक्के थे। इस कारण उन्हें कई बार कड़े संघर्ष करने पड़े। संघर्ष में वे विजयी हुए। सेवा–निवृति के बाद भी शिक्षा कार्यों से जुड़े रहे। तत्कालीन शिक्षा संचालक प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री श्री भैरवनाथ झा और पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी से उनके बड़े घनिष्ठ और सम्मान पूर्ण संबंध रहे। पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे अतः उनके कवि पुत्र महेन्द्र भटनागर को भी उनका आशीर्वाद और स्नेह मिला। श्री रघुनन्दनलालजी का निधन कोरोनरी थोम्ब्रोसिस से 17 जुलाई 1959 को लगभग 59 वर्ष की आयु में ग्वालियर में हुआ।

प्रारंभिक शिक्षा :

महेन्द्र भटनागर की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। पिताश्री जब प्रधानाध्यापक बनकर माध्यमिक विद्यालय, सबलगढ़ (मुरैना) पहुँचे तब वे वहाँ प्रथम बार सातवीं कक्षा में भर्ती हुए। वहीं प्राथमिक चिकित्सा (सेंट जॉन एम्बुलेन्स, एसोसिएशन) की परीक्षा उत्तीर्ण की। ग्वालियर रियासत की नौकरी में, पिता जहाँ–जहाँ स्थानान्तरित होकर गए वहाँ पूरे परिवार को जाना पड़ा। 'मुरार विद्यालय' से 8वीं कक्षा उत्तीर्ण की। परीक्षा–केन्द्र 'गोरखी विद्यालय', लश्कर था। सन् 1941 में हाईस्कूल मुरार से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। अंक गणित में बेहद कमजोर थे। रेखा–गणित और बीज–गणित के बल पर गणित विषय में उत्तीर्ण हो सके। चित्रकला और इतिहास में विशेष रूचि थी। उन दिनों पिता छात्रावास के अधीक्षक थे और विद्यालय परिसर में ही रहते थे। इस समय द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। दैनिक समाचार–पत्रों को देखने–पढ़ने से देश–विदेश की गतिविधियों में रूचि उत्पन्न हुई। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के आन्दोलनों और राष्ट्रीय नेताओं तथा हिटलर–मुसोलिनी–चर्चिल–स्तालिन के बारे में जाना। साम्राज्यवाद, नाजीवाद, प्रजातंत्र और साम्यवाद से परिचय हुआ।

www.ignited.in

यह काल महेन्द्र भटनागर के बौद्धिक जागरण का काल है। छात्रावास के प्रबुद्ध छात्रों के भी सम्पर्क में आए, जिनमें कवि स्व. श्री रघुनाथ सिंह चौहान के संसर्ग की स्मृतियाँ सजीव हैं। 1941 में इंटरमीडिएट कक्षा के प्रथम वर्ष में विक्टोरिया कॉलेज ग्वालियर में प्रवेश। अंग्रेजी–हिन्दी के अतिरिक्त अन्य विषय अर्थशास्त्र और भूगोल थे। पिताजी का स्थानान्तरण होने से इंटरमीडिएट का द्वितीय वर्ष 'माधव महाविद्यायल' उज्जैन से 1943 में उत्तीर्ण किया। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री नरेश मेहता यहाँ उनके सहपाठी रहे। इस दौरान मुरार में अपने बड़े चाचाजी के पास रहे। इन्हीं दिनों कई लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों से परिचय हुआ जिनमें श्री हरिनिवास द्विवेदी और श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द प्रमुख थे। श्री हरिहर निवास द्विवेदी की प्रेरणा से इसी सत्र 'उत्तमा' के प्रथम खण्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की। कवि श्री महेन्द्र भटनागर जी को डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' से पढ़ने का अवसर विक्टोरिया कॉलेज में प्राप्त हुआ।

आर्थिक स्थिति :

कवि श्री महेन्द्र भटनागर की घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः वह आगे नहीं पढ़ पाये, बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् जुलाई 1945 में 'मॉडल हाईस्कूल' उज्जैन में भूगोल के अध्यापक की नौकरी स्वीकार की। इसके पूर्व इसी स्कूल में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री गजानन माधव मुक्तिबोध ने भी अध्यापन कार्य किया था। यहीं श्री गजानन माधव मुक्तिबोध के अनुज यशस्वी मराठी–कवि श्री शरच्चंद्र मुक्तिबोध से महेन्द्र भटनागर का घनिष्ठ परिचय हुआ। सन् 1950 में 'टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, देवास' से एल.टी. का डिप्लोमा किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उन दिनों 'शांतिनिकेतन' में थे। डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के लिखने पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने महेन्द्र भटनागर जी को शोध करने हेतु 'शांतिनिकेतन' बुलाया, किन्तु घर की आर्थिक स्थिति शोचनीय होने के कारण वे हाईस्कूल की अपनी सरकारी पक्की नौकरी छोड़कर शोध–कार्य करने 'शांतिनिकेतन' नहीं जा सके। आगे चलकर अध्यापन–कार्य करते हुए सन् 1957 में डॉ. विनय मोहन शर्मा के निर्देशन में 'नागपुर विश्वविद्यालय' से 'प्रेमचन्द के उपन्यास' नामक विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

विवाहित जीवन :

महेन्द्र भटनागरजी का विवाह 12 मई, 1952 को स्व. श्री वसंतराय भटनागर की सुपुत्री कमलेश कुमारी से मुरार (ग्वालियर) में हुआ। श्रीमती कमलेश कुमारी (कवि द्वारा प्रदत्त नाम 'सुधारानी') ने सन् 1950 में पंजाब विश्वविद्यालय की भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की तथा विवाह के पश्चात् 1954 में मैट्रिक परीक्षा। कवि श्री महेन्द्र भटनागर के तीन पुत्र हैं, जिनमें ज्येष्ठ पुत्र श्री अजय कुमार डॉक्टर हैं, दूसरे पुत्र आलोक कुमार बैंक में ब्रांच मैनेजर है तथा तीसरे पुत्र कुमार आदित्य विक्रम यशस्वी गायक (सुगम–संगीत) हैं।

कार्यक्षेत्र :

महेन्द्र भटनागर जी ने 'मॉडल हाईस्कूल, उज्जैन' में (1945–46) मात्र एक सत्र सर्विस की। 1946 से वे शासकीय सेवा में आये और 'महाराजवाड़ा हाईस्कूल, उज्जैन' में सहायक अध्यापक के पद पर पदस्थ हुए। 1950 में 'आनन्द इंटरमीडिएट कॉलेज', धार में हिन्दी के व्याख्याता बने। इस समय तक वे हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों की प्रथम पंक्ति में स्थान पा चुके थे और हिन्दी की लब्धप्रतिष्ठ सभी पत्रिकाओं में प्रमुखता से छपते थे। 1955 में 'माधव महाविद्यालय, उज्जैन' में प्राध्यापक बने। 1957 में पदोन्नत होकर सहायक प्रोफेसर। 1969 में 'शासकीय महाविद्यालय, मंदसौर' में स्नातकोत्तर प्रोफेसर बने। 1978 में 'कमलाराजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर' आ गये और यहीं से 30 जून, 1984 को सेवा–निवृत्त हुए।

महेन्द्र भटनागर प्रमुख रूप से कवि हैं – किन्तु प्रोफेसर पद पर कार्यरत रहने के फलस्वरूप शोध की दिशा में भी उनकी कुछ उपलब्धियाँ हैं। प्रेमचन्द के औपन्यासिक दृष्टिकोण पर उनका स्वंय का शोध–कार्य मौलिक व विशिष्ट है। उनके निर्देशन में 16 शोधार्थियों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

महेन्द्र भटनागर की काव्य–यात्रा स्वाधीनता–पूर्व भारत से शुरू होकर 'नयी कविता' और 'समकालीन कविता' के व्यापक परिदृश्य को समेटे हुए चलती है। यह काल–खण्ड अनेक विभिन्नताओं और विविधताओं से भरा हुआ है। विगत 50–60 वर्षों में भारत और सम्पूर्ण विश्व में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। 20वीं शताब्दी उपलब्धियों और हलचलों से भरी शताब्दी रही है। भारत में भी अनेकानेक परिवर्तन हुए हैं। इनका इतिहास रोचक और दिलचस्प है। हिन्दी में बहुतकम ऐसे कवि हैं, जिनकी कृतियों के माध्यम से स्वाधीनता–पूर्व और बाद के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य का जायजा लिया जा सकता है। बेशक, महेन्द्र भटनागर एक ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं में समय और इतिहास की धड़कनों को सुना जा सकता है।''

कवि महेन्द्र भटनागर के काव्य की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं –

''कवि महेन्द्र भटनागर की सरल सीधी ईमानदारी और सच्चाई पाठक को बरबस अपनी तरफ खींच लेती है। प्रयोग के लिये प्रयोग न करके, अपने को धोखा न देकर और संसार से उदासीन होकर संसार को ठगने की कोशिश न करके इस कवि ने अपनी समूची पीढ़ी को ललकारा है कि जनता के साथ खड़े होकर नयी जिन्दगी के लिए अपनी आवाज बुलन्द करे।

''कवि के पास अपने भावों के लिए शब्द है, छंद है, अलंकार हैं। उनके विकास की दिशा यथार्थ जीवन का चितेरा बनने की ओर है। साम्प्रदायिक द्वेष, शासक–वर्ग के दमन, जनता के शोक और क्षोभ के बीच सुन पड़ने वाली कवि की इस वाणी का स्वागत।''

जो गिरती दीवारों पर नूतन जग का सृजन करे

वह जनवाणी है !

वह युगवाणी है !

कवि महेन्द्र भटनागर ने समाज और राष्ट्र को अपने काव्य में प्रमुखता से चित्रित किया है।

महेन्द्र भटनागर प्रगतिवाद के द्वितीय उत्थान के केन्द्रीय कवि माने जाते हैं। सन् 1947 ई. में पहलीबार 'हंस' में महेन्द्र भटनागर की कविता प्रकाशित हुई थी।

कवि श्री महेन्द्र भटनागर अपनी कविता लेखन के विषय में कहते हैं – ''आज की कविता 'प्रगति' और 'प्रयोग' के दृष्टिकोण से देखी जाती है। मैं प्रयोग करता हूँ, लेकिन प्रयोग से मेरा अभिप्राय प्रयोगवादियों से भिन्न है, जो प्रयोग के चमत्कारिक प्रदर्शनों से साहित्य की जनवादी विचारधारा को

दबा रहे हैं। प्रयोगों का सामाजिक संबंध होना अनिवार्य है। प्रगतिशील दृष्टिकोण से जन–जीवन के भावों की अभिव्यक्ति यदि नाना रूपों में की जाती है तो यह एक स्वस्थ और जीवनदायी परम्परा कही जाएगी। मैं यह देख रहा हूँ कि हिन्दी के अनेक प्रगतिशील–जनवादी कवियों में आज वह तेजी नहीं रही जो पहले थी। उनमें से बहुत से प्रयोग–शैली के भँवर में फँसकर जनवादी परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं। उनकी कविताएँ दुरूह, कलाहीन और अप्रभावशाली होती जा रही है। मैं जहाँ कविता में नये–नये प्रयोगों का समर्थक हूँ, वहाँ दूसरी ओर उसके विचार–पक्ष में प्रगतिशील–दर्शन की छाया भी देखना चाहता हूँ – तभी कविता राष्ट्रीय तथा सामाजिक चेतना दे सकेगी, ऐसा मेर विश्वास है। अन्यथा वह थोड़े से व्यक्तियों की चीज बनकर रह जाएगी और स्त्रष्टा युगधर्म निभाने में असफल रहेगा।''

कवि श्री महेन्द्र भटनागर ने अनेक उत्तरदायी कार्यों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। वे 'देवी अहिल्याबाई' (इन्दौर), 'विक्रम' (उज्जैन) और 'जीवाजी' (ग्वालियर) विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण समितियों पर रहे। संक्षेप में उनके कार्यों एवं उपलब्धियों की तालिका प्रस्तुत है :–

1. साहित्यिक संस्थाओं के पदाधिकारी

– प्रतिभा निकेतन, देवास (सचिव)

– युवक साहित्यकार संघ, धार (अध्यक्ष)

– हिन्दी साहित्य परिषद, उज्जैन (सचिव)

– आन्तर–भारती, उज्जैन (सचिव)

– मानस चतुश्शती समारोह जिला समिति, मंदसौर (उपाध्यक्ष)

– सूर–पंचशती समारोह जिला–समिति, मंदसौर (अध्यक्ष)

– महर्षि अरविन्द शताब्दी समारोह समिति, मंदसौर (सदस्य)

– प्रबुद्ध भारती, ग्वालियर (अध्यक्ष)

– मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (सदस्य : 'हिन्दी विषय

सलाहकार समिति' – 1981 से 1983)

2. संयोजक :

युवा–लेखक–शिविर – 1980 (मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल एवं जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित) ।

3. आकाशवाणी :

सदस्थ – ड्रामा ऑडीशन कमेटी, केन्द्र इंदौर (1960) अनुबन्धित कवि 1954 से सुगम संगीत, आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से विभिन्न कार्यक्रमों का समय–समय पर प्रसारण।

4. निर्णायक (पुरस्कार योजनाएँ) :

(1) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना – 1981, 83

(2) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ – 1983

5. अनुवाद–कार्य :

मराठी कविताओं का हिन्दी में।

(आकाशवाणी केन्द्र – इन्दौर से 'दिल की बोली एक' नामक कार्यक्रमान्तर्गत

प्रसारित 1966)

6. प्रतिभागी :

लेनिन शताब्दी परिसंवाद (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा इन्दौर में आयोजित) ।

7. प्रकाशित मौलिक कृतियाँ : काव्य

(1) तारों के गीत 1949

(2) टूटती श्रृंखलाएँ 1949

(3) बदलता युग 1953

(4) अभियान 1954

(5) अन्तराल 1954

(6) विहान 1956

(7) नई चेतना 1956

(8) मधुरिमा 1959

(9) जिजीविषा 1962

(10) सन्तरण 1963

(11) संवर्त 1972

(12) संकल्प 1977

(13) जूझते हुए 1984

(14) जीने के लिए 1990

(15) आहत युग 1997

(16) अनुभूत क्षण 2001

(17) मृत्यु–बोध : जीवन–बोध (2001)

(18) राग–संवेदन 2005

शोध–आलोचना :

(19) समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द (शोधप्रबंध) 1957

(20) आधुनिक साहित्य और कला 1956

(21) विजय–पर्व : एक अध्ययन 1957

(22) दिव्या : विचार और कला 1956

(23) नाटककार हरिकृष्ण 'प्रेमी' और 'संवत–प्रवर्तन' 1961

(24) 'पुण्य–पर्व' आलोक 1962

रेखाचित्र/लघुकथा :

(25) लड़खड़ाते कदम 1952

(26) विकृतियाँ 1958

(27) विकृत रेखाएँ : धुँधले चित्र, संयुक्त, 1966

एकांकी /फीचर :

(28) अजेय–आलोक 1962

बाल/किशोर साहित्य :

(29) हँस–हँस गाने गाएँ हम ! 1957

(30) बच्चों के रूपक 1958

(31) देश–देश की कहानी 1967

(32) जय–यात्रा 1971

(33) दादी की कहानियाँ 1974

संदर्भ ग्रंथ

1. सामाजिक चेतना के शिल्पी कवि महेन्द्र भटनागर : सं. डॉ. हरिचरण शर्मा, पृ. 1
2. वही, पृ. 1
3. महेन्द्र भटनागर की काव्य–साधना : श्रीमती ममता मिश्रा, पृ. 1 और 3
4. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द नाम से प्रकाशित
5. महेन्द्र भटनागर समग्र : कविता खण्ड–1, पृ. 36–37
6. वही, डॉ. रामविलास शर्मा
7. महेन्द्र भटनागर समग्र : कविता खण्ड–1 आमुख
8. महेन्द्र भटनागर समग्र भाग–1, पृ. 11 डॉ. श्रीनिवास शर्मा
9. प्रगतिवादी कवि महेन्द्र भटनागर अनुभूति और अभिव्यक्ति, डॉ. माधुरी शुक्ला, पृ. 34–37
10. आलोचना, जुलाई 1954, पृ. 64